उपसंहार

उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर नाटक साहित्य में नरेंद्र कोहली ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपने सन् 1975 से नाटक लिखकर अपने प्रदीर्घ नाट्य-यात्रा में मौल्यवान नाटकों की निर्मिति कर हिंदी नाटक साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान निभाया है। आपने अपनी नाट्य-यात्रा में मानवीय जीवन की समस्याओं का निर्वाह कर हिंदी नाट्य जगत् को समकालीन परिस्थिति से जोड़ा है। नरेंद्र कोहली एक संवेदनशील, चिंतनशील, व्यक्तित्व के साहित्यकार हैं। आपकी नाट्य कृतियों से आपकी गहरी अध्ययनशीलता, चिंतन की सूझ-बूझ, समाज के प्रति अपने कर्तव्य, साहित्यकार के रूप में पूरी सतर्कता आदि के दर्शन होते हैं। आपका व्यक्तित्व आपकी रचनाओं से दर्शकों तथा पाठकों के सामने स्पष्ट रूप से झलकता है। आपके प्रत्येक नाटक में सामाजिक समस्याएँ दिखाई देती हैं। उस गहन विषय को पौराणिक या ऐतिहासिक कथा और पात्रों के माध्यम से आधुनिक संदर्भों को सरलता से दर्शकों तथा पाठकों तक संप्रेषित किया है। नरेंद्र कोहली ने अपने समसामायिक युग की समस्याओं को अभिव्यक्ति देने के लिए, समाज को जागृत करने के लिए अपने स्वर्णीय अतीत में झाँककर अतीत की समस्या को वर्तमान से जोड़ने का प्रयत्न किया है।

नरेंद्र कोहली का जन्म स्यालकोट में हुआ। देश विभाजन के कारण कोहली को परिवार को स्यालकोट, अमृतसर, दिल्ली, जमशेदपुर आदि नगरों में भटकना पड़ा। बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, लेकिन प्राथमिक स्तर से ही प्रतिभाशाली नरेंद्रजी हर कक्षा में प्रथम आते रहे। मैट्रिक के बाद उन्होंने साहित्य पढ़कर लेखक बनने का निश्चय किया और वे एक जानेमाने लेखक बन गए। एक जिम्मेदार पिता, आध्यापक और लेखक के त्रिमुखी दायित्व को नरेंद्र कोहली ने बड़ी अच्छी तरह निभाया है। नरेंद्र कोहलीजी की पत्नी मधुरिया इनके सुख दुःखों में साथ देनेवाली सच्ची सहयोगिनी बनी रही है। नरेंद्र कोहलीजी के व्यक्तित्व में स्वाभिमान, जिंदादिली, अध्ययनशीलता, निर्भिकता, अपमान, ईमानदारी आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं। उनका साहित्यारंभ कहानी के माध्यम से हुआ। उपन्यास, कहानी, नाटक, व्यंग्य साहित्य, बालसाहित्य, समीक्षा आदि के माध्यम से वे आजतक लिखते आ रहे हैं।

नरेंद्र कोहली के नाटकों में कथावस्तु महत्त्वपूर्ण तत्व है क्योंकि बिना कथानक के उपन्यास हो या नाटक या कहानी अधूरी हैं। नरेंद्र कोहली के नाटकों में कथावस्तु का सफलता से निर्वाह हुआ है। इसमें कथानक की संबंद्धता, मौलिकता, निर्माण कौशल तथा सत्यता, रोचकता, नाटकीयता का पूरा निर्वाह करने की चेष्टा की गई है। नरेंद्र कोहली के नाटकों में मुख्य कथा के साथ-साथ कई गौण कथाएँ भी जुड़ी हुई हैं। गौण कथाएँ मुख्य कथा को आगे बढ़ाती रही हैं। इन के नाटकों की कथा में मिथकों के प्रयोग मिलते हैं। इस दृष्टि से 'शम्बूक की हत्या' मिथकीय प्रयोग है। इनकी कथावस्तु में उन्होंने प्राचीनता में आधुनिकता को तलाशने का प्रयत्न किया है। आज का समाज, आज की राजनीति, आज का प्रशासन आदि पर कठोर व्यंग्य कथावस्तु द्वारा करके नरेंद्र कोहली ने उपेक्षित गरीब, अभावग्रस्त समाज जीवन की पक्षधरता की है। 'शम्बूक की हत्या' की कथावस्तु इस दिशा में एक प्रशंसनीय प्रयोग है। मुख्य कथा को विकसित करने का महत्त्वपूर्ण काम गौण कथाएँ करती हैं। शम्बूक की हत्या में ब्राह्मण के पुत्र शम्बूक की अकाल मृत्यु का कारण शासन का पाप है। इस कथ्य द्वारा रामायण के मिथ को लेकर आधुनिक मुख्य कथा का निर्वाह किया है, इसमें रामायण की परशुराम, विश्वामित्र दशरथ संबंधी गौण कथाएँ आयी हैं जो गौण कथाएँ मुख्य कथा को गतिमान बनाने में अच्छा योगदान निभाती हैं। उनके 'हत्यारे' नाटक में भी महानगरीय जीवन की गुंड़ई, असुरक्षा को कथावस्तु के केंद्र में केंद्रित करते हुए, गौण कथाओं के माध्यम से विकसित किया है। इसमें रमेश की हत्या की मुख्य कथा है और हत्या के समय पर पात्रों की चर्चा द्वारा पुलिस व्यवस्था, मुंबई का वातावरण, खन्ना, वैजयंती संबंधी ये गौण कथाएँ आयी हैं, जो मुख्य कथा को सुदृढ़ और सशक्त बनाती हैं। 'निर्णय रूका हुआ' यह नाटक भी कथावस्तु की दृष्टि से संपन्न है, इसमें घर बांधने की प्रक्रिया में आनेवाली बाह्य रूकावटों के कारण घर बांधने की प्रक्रिया के निर्णय में देरी कैसे होती है, इसे स्पष्ट किया है। इसमें लकड़ी कैसे सस्ते भाव से लाए, घर की सुविधाएँ कैसी बढ़ाए, सबकी इच्छाओं की पूर्ति कैसे की जाए, इस पर आधारित मुख्य कथा है, इस मुख्य कथा को विकसित करने का काम वर्मा द्वारा निर्देशित गाँव की कथा, पौराणिक राजपरिवार की कथा आदि गौण कथाएँ करती हैं।

नाटक साहित्य में पात्र और चरित्र-चित्रण नाटक के शिल्प पक्ष का महत्त्वपूर्ण अंग है, क्योंकि बिना पात्रों के नाटकों की रचना ही संभव नहीं है। नरंद्र कोहली ने आलोच्य नाटक के

पात्रों द्वारा नाटक की कथावस्तु का विकास किया और अपना जीवन विषयक दृष्टिकोण पात्रों के माध्यम से ही स्पष्ट किया है।

नाटक और रंगमंच का अनन्य साधारण संबंध है। बिना रंगमंच के नाटक की कोई उपलब्धि नहीं है और बिना नाटक के रंगमंच का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में नाटक एक ऐसी सशक्त विधा है, जिसे रंगमंच का वरदान प्राप्त हुआ है। नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल हैं। कोहली के आलोच्य नाटकों की भाषा रंगमंच और दर्शकों से सीधी जुड़ी होने के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से पृथक होती है। नरेंद्र कोहली आधुनिक नाटककार होने के कारण उनकी नाट्यभाषा सामान्य बोलचाल की, मानवीय संवेदनाओं को वाणी देनेवाली है, जिसके द्वारा मानवीय नियति की त्रासदी उभारने में नाटककार सफल हुए हैं। संक्षेप में नरेंद्र कोहली के नाटकों का अनुशीलन करते समय नाटक के तत्वों पर नाटककार खरा उतरा है।

नरेंद्र कोहली के समस्याप्रधान नाटकों के अंतर्गत 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे', 'निर्णय रूका हुआ' आदि नाटक आते हैं। ये तीनों नाटक आधुनिक युगबोध पर प्रकाश डालते हैं। इस लघु-शोध-प्रबंध में आधुनिक नाटककार नरेंद्र कोहली के नाटकों की विशेषताओं एवं तत्वों को लक्ष्य बनाकर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

प्रारंभ में नरेंद्र कोहली का जीवनवृत्त तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी प्रस्तुत की है। नरेंद्र कोहली चिंतनशील, संवेदनशील, प्रतिभासंपन्न नाटककार हैं। नरेंद्र कोहली के नाटकों में चित्रित मानवजीवन की समस्या को प्रवाहित करना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। नरेंद्र कोहली के व्यक्तित्व में विद्ध्वता, चिंतनशीलता, संवेदनशीलता, गंभीरता के साथ सरलता का भी संयोग हुआ है। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, आत्मपरक निबंध, बाल साहित्य, शोध : आलोचना आदि विविध क्षेत्रों में अपने पांडित्य एवं प्रतिभा का दर्शन करा दिया है। नरेंद्र कोहली के नाटकों में आधुनिक युग का यथार्थ पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित दिखाई देता है।

नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटक भारतीय जीवन की त्रासदी, समस्या, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक विषमताओं, शोषण, रिश्वतखोरी, अत्याचार, भ्रष्टव्यवस्था आदि का यथार्थ चित्रण पेश करते हैं। 'शम्बूक की हत्या' नाटक मिथकीय नाटक है जिसमें पुरातन मिथक के आधार

पर आधुनिक युग की अभावग्रस्तता, दरिद्रता, शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक दूराचार आदि पर गहराई से चिंतन किया है। 'हत्यारे' नाटक मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा पारिवारिक स्थिति एवं पारिवारिक संघर्ष को स्पष्ट करता है। 'निर्णय रूका हुआ' नाटक सामान्य मध्यवर्गीय व्यक्ति की इच्छापूर्ति को समस्याओं के जाल के अंदर कैसे ध्वस्त होना पड़ता है, इसे स्पष्ट करता है।

नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों के कथासौष्ठव पर हमने गहराई से सोचा है। 'शम्बूक की हत्या' नाटक में मिथकीय शैली का प्रयोग करके शासन के पाप के कारण ब्राह्मण पुत्र शम्बूक की मृत्यु हुई, इस व्यंग्य के द्वारा आधुनिक जीवन को रामायण के संदर्भों के साथ जोड़ने का सफल प्रयास नाटककार ने कथावस्तु के माध्यम से किया है। नाटककार ने इस नाटक द्वारा स्वातंत्र्योत्तर भारत की साधारण जनता के निष्ठूर शोषण को, भारत की समसामायिक राजनीतिक परिस्थिति को, हास्य-व्यंग्य के साथ स्पष्ट किया है। नाटककार नरेंद्र कोहली ने शम्बूक को भारत का भविष्य मानकर राजनीतिक भ्रष्टता से हत्या का शिकार बनाया है, जिसका ब्राह्मण याने जनता द्वारा प्रायःश्चित करने का सवाल उठाने का प्रयत्न किया है। 'हत्यारे' नाटक में अधिक संतानें होने पर माता-पिता द्वारा दुर्लक्षित संतान की गैर-हरकतें, कुचक्र, गुंड़ई, असामाजिक गंदगी में फँसकर बरबादी को स्पष्ट किया है। ऐसे संतान की समस्या को मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा स्पष्ट करके बेटे की मृत्यु पर परिवार की हुई दुर्दशा, मानसिकता पर प्रकाश डाला है। 'निर्णय रूका हुआ' नाटक व्यंग्य प्रधान नाटक है। नरेंद्र कोहली ने व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैली के द्वारा रिश्वतखोरी की अखंड़ परंपरा पर व्यंग्य और सार्वजनिक जीवन के प्रदूषण पर नाटकीयता से चोट करनेवाले प्रसंगों को चुनकर आधुनिक संदर्भ को स्पष्ट किया है। नाटक में मध्यवित्त परिवार द्वारा महानगरों में घर बांधते समय आनेवाली दिक्कतों पर चिंतन किया है। लकड़ी की समस्या द्वारा घर बांधने के बारे में होनेवाले निर्णय के विलंब पर नए तरीके से चिंतन करने को नाटककार ने हमें बाध्य किया है।

संक्षेप में नरेंद्र कोहली ने आलोच्य नाटकों की कथावस्तु में विविधता और व्यापकता को समान रूप से अपनाया है। वे एक ओर वर्तमान धरातल पर यथार्थ चित्रण को कथानक का विषय बनाते हैं, वही दूसरी ओर इतिहास की सांस्कृतिक चेतना को उभारने का प्रयास करते हैं। वे वर्तमान जीवन की आशा, आकांक्षा, घुटन, आतंक को अनदेखा नहीं कर सकते, वही

सदियों से चली आ रही मानवीय जिजीविषा को नकार नहीं सकते। वर्तमान यथार्थ के कठोर धरातल से उपजी पीड़ा और संघर्ष की भावना उन्हें वर्तमानकालीन कथ्य अपनाने के लिए विवश करती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो नरेंद्र कोहली के नाटक विविधता से युक्त हैं। एक ओर वे अपनी रचनाओं द्वारा वर्तमान जीवन की समस्याप्रधान व्याकुलता, छटपटाहट, आक्रोश को अभिव्यक्त करते हैं तो दूसरी ओर रामायण की कथा का पुनर्सृजन कर उन्हें आधुनिकता का जामा पहनाकर वर्तमान समस्याओं को उद्घाटित करते हैं।

नरेंद्र कोहली के नाटकों में चित्रित पात्र अत्यंत सजीव और स्वाभाविक हैं। उनके आलोच्य नाटक के पात्र कल्पनालोक में विचरण करनेवाले नहीं बल्कि यथार्थ जीवन और जगत में रहनेवाले हैं। इन पात्रों में मानवीय आकांक्षाएँ, इच्छाएँ, विषय-वासनाएँ, अदम्य भावनाएँ और संवेदनाएँ हैं। ये पात्र समय-समय पर गुस्सा, क्रोध, ईर्ष्या, मोह, माया, प्रेम आदि भावों के चक्कर में फंसकर मानसिक आवेगों को व्यक्त करते हैं। कभी उन्हें सफलता मिलती है, तो कभी असफलता। नरेंद्र कोहली के नाटकों के पात्रों में कभी प्रेम और आदर्श का प्रकाश प्रस्फुटित होता है तो कभी ईर्ष्या, द्वेष और अहम् की ज्वाला में ध्वस्त होते हैं। शम्बूक की हत्या के क्लर्क, क्रांतिबाबू, सब-इन्स्पेक्टर, चपरासी आदि पात्र 'हत्यारे' के बनारसीदास, शांति, खन्ना, सुरेश आदि पात्र तथा 'निर्णय रूका हुआ' के सावित्री, सतीश, वर्मा आदि पात्र नाटक में सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। नरेंद्र कोहलीजी ने अन्य पात्रों के क्रियाकलाप तथा बातचीत द्वारा नाटक में न आए हुए पात्रों का अपने संवादों के माध्यम से चित्रण किया है। शम्बूक और रमेश इसका अच्छा उदाहरण है। पात्रों के मानसिक उतार-चढ़ाव को नाटककारने मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। प्राप्त परिस्थितियों के अनुकूल नाटककार ने पात्रों के स्वभाव गुणों को मोड़ दिया है। नाटककार के पात्र कभी अपने आदर्शों से टूटकर परिस्थितियों से समझौता करते हैं और कभी परिस्थितियों से हारकर अपना हृदय परिवर्तन करते हैं, यह सब सूक्ष्म विश्लेषण चरित्र-चित्रण द्वारा देख सकते हैं। आलोच्य नाटकों के पात्र वर्गगत और व्यक्तिगत दोनों विशेषताओं से युक्त हैं। वे विविध विषयों पर अपना मत प्रकट करते हुए अपने विविध स्तरीय व्यक्तित्व को उभारते हैं। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से आलोच्य नाटकों के पात्र गतिशील और बहुमुखी प्रतिभा के लगते हैं।

नरेंद्र कोहली ने 'शम्बूक की हत्या' नाटक में प्राचीन और आधुनिक समांतर कथाबीजों द्वारा बिंब-प्रतिबिंब को साकार करने के लिए नाटक के पात्र पौराणिक और आधुनिक दो

स्तरों के चुने हैं। नाटक का प्रमुख पात्र ब्राह्मण अभावग्रस्त होकर भी प्रशासकीय हरकतों पर अंकुश लगानेवाला कर्तव्यदक्ष पात्र है। क्लर्क अपनी चतुराई से सामने आकर शासन की घुसखोरी का समर्थन करनेवाला आधुनिक युग का भ्रष्ट पात्र है। क्रांतिबाबू चिंतनशील, दार्शनिक विचारवाले आधुनिक युग के समाजसुधारक हैं। पुलिस व्यवस्था, शासन व्यवस्था, दफ्तरों की व्यवस्था पर कांस्टेबल, पुलिस इन्स्पेक्टर, चपरासी द्वारा प्रकाश डाला गया है। 'हत्यारे' नाटक द्वारा अधिक संतानों के कारण दुर्लक्षित बेटे की हत्या को चित्रित करते समय बनारसीदास जैसे स्वार्थी, विश्वास न रखनेवाला अपने पर ही प्यार करनेवाला घोर व्यवहारवादी, व्यक्ति के रूप में दिखाया है। शांति एक भारतीय नारी की परंपरावादी चौखट में रहनेवाली नारी है। अनिल एकमात्र सुसंस्कृत, अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत युवक हैं। शालिनी एक समझदार शांत स्वभाववाली बेटी और पत्नी है। सुरेश एक व्यवहारवादी पात्र है। परेश और उर्मिला भावनाप्रधान पात्र है। 'निर्णय रूका हुआ' में पात्रों द्वारा मूल समस्या का हल ढूँढ़ने का प्रयास करके मानवी जीवन के संघर्ष को स्पष्ट किया है।

संक्षेप में नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटक के सभी पात्र विभिन्न परिवेश में पले होने के कारण प्रत्येक पात्र अपना खुद का एक व्यक्तित्व अलग रूप से प्रस्तुत करता है।

नरेंद्र कोहली नाटक के मंचन को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। नरेंद्र कोहली ने अभिनेयता की दृष्टि से ही अपने नाटकों का सृजन किया है। नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटक अभिनय, दृश्य-सज्जा, संवाद योजना, पात्र योजना, रंगभूषा, वेशभूषा, प्रकाश, ध्वनि, संगीत आदि द्वारा मंचीयता की दृष्टि से सफल हैं। संवाद योजना दृश्य घटना पर आधारित होने के कारण संवाद पात्रानुकूल और परिवेश की उपज लगते हैं। नरेंद्र कोहली ने सफल मंचीयता द्वारा आधुनिक युग की समस्याओं को पाठकों, दर्शकों तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है। मंचीयता की दृष्टि से इन नाटकों में सभी दृश्य सफलता से दिखाए जाते हैं। नेपथ्य के द्वारा संकेत देने की आवश्यकता नहीं रहती है।

नरेंद्र कोहली के नाटकों में भाषा के विविध रूप देखने को मिलते हैं। भाषा सरल एवं सुबोध है। वह कहीं संस्कृतनिष्ठ, कहीं अंग्रेजी से प्रभावित, कहीं मुहावरें, सुक्तियों से प्रभावित, तद्भव, तत्सम, देशज शब्दों के प्रयोग से भाषा निखरी हुई है। वार्तालाप की भाषा में

जनभाषा का, परिनिष्ठित भाषा का स्वाभाविक एवं सफल प्रयोग किया गया है। नरेंद्र कोहली की भाषा में अपूर्व प्रवाह, गत्यात्मकता एवं प्रसंगानुकूलता है। व्यंग्य करने की अद्‌भूत क्षमता भी उनकी भाषा-शैली का विशिष्ट गुण है। नरेंद्र कोहली ने अत्यंत स्वाभाविक एवं जीवंत भाषा का प्रयोग किया है। वे सर्वत्र कथा, पात्र एवं परिस्थिति के अनुकूल भाष-शैली को अपनाते हैं। उनकी प्रगल्भ भाषा-शैली की सजीवता ने ही सामाजिक, संवेदनाओं, समस्याओं, अनुभूतियों को सहज वाणी प्रदान की है। इस प्रकार नरेंद्र कोहली ने 'शम्बूक की हत्या' में मिथकीय शैली का प्रयोग किया है। 'हत्यारे' नाटक में मनोवैज्ञानिक और 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक शैलियों को प्रमुख रूप से प्रयोग में लाया है। चित्रणात्मक, भावात्मक, परोक्ष, सांकेतिक, संवाद आदि शैलियों का प्रयोग करके नाटककार ने अपनी भावुकता एवं विद्‌ध्वतापूर्ण भाषा-शैली का सुंदर समन्वय भी किया है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों में सुगठित घटना प्रवाहों, धारावाही रोचक कथा-सूत्रों, पात्रानुकूल तथा परिस्थितिनुरूप संवाद योजनाओं, देशकाल वातावरण से संपन्न सजीव चित्रणों, यथार्थ एवं गतिशील पात्र योजनाओं, सौद्‌देश्य कथानक के साथ जुड़ी नाटककार की संवेदनाओं आदि सबको नाटककार ने अपने आलोच्य नाटकों में समाविष्ट किया है। इसमें यह भी स्पष्ट होता है कि नरेंद्र कोहली ने खुली आँखों से तथा प्रबुद्‌ध मस्तिष्क से जीवन के यथार्थ को देखा, परखा और अनुभव किया है और अपने नाटकों द्‌वारा अनुभूतिजन्य विषयों को अपने नाटकों का विषय बनाया। नरेंद्र कोहली के नाटकों की कथावस्तु का आधार मानव जीवन की पीड़ा है। मध्यवर्गीय मानवी जीवन की पीड़ा तथा इन पीड़ाओं का समाधान 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे', 'निर्णय रूका हुआ' नाटकों के माध्यम से नरेंद्र कोहली ने प्रस्तुत किया है। आलोच्य तीनों नाटक शिल्प की दृष्टि से सफल एवं संपन्न लगते हैं। तीनों नाटकों के विषय भिन्न-भिन्न हैं फिर भी इन विभिन्न विषयों में मानवी जीवन की पीड़ाओं को केंद्र में रखकर आधुनिक युग के समाज जीवन की स्थिति और गति को नाटककार ने सुस्पष्ट किया है।

संक्षिप्त में नरेंद्र कोहली के इन आलोच्य नाटकों के अनुशीलन के उपरांत निम्न लिखित तथ्य सामने उभरते हैं-

1. इन आलोच्य नाटकों की कथावस्तु सुगठित, घटनाओं से परिपूर्ण, मुख्य कथावस्तु को

आगे बढ़ानेवाली गौण कथाओं से संपन्न है।

2. विवेच्य नाटकों की कथावस्तु में कहीं पर प्राचीनता में आधुनिक युगबोध मिलता है, तो कहीं पर युग-सत्य के दर्शन होते हैं।
3. इन नाटकों के पात्र विविध स्तरों से और विविध परिवेशों से जुड़े हैं, जो अपनी-अपनी अनुभूति और संवेदना के माध्यम से नाटक में विचार प्रस्तुत करते हैं। ये पात्र परिवेश की उपज लगते हैं।
4. नरेंद्र कोहली के पात्र गांधीवादी, मार्क्सवादी विचारों के वाहक लगते हैं।
5. नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के पात्र गतिशील हैं, स्थितिशील बनकर रहना पसंद नहीं करते हैं।
6. आलोच्य नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल हैं, इनमें मंचीयता की दृष्टि से कोई गहनता के दर्शन नहीं होते हैं।
7. इन नाटकों की पीड़ाएँ आम जीवन की पीड़ाएँ हैं, जिससे मानव प्रताड़ित हो रहा है।
8. इन नाटकों के माध्यम से नरेंद्र कोहली की सामाजिक संपृक्ति के दर्शन होते हैं।
9. इन नाटकों में नरेंद्र कोहली ने महानगरीय, नगरीय जीवन के परिवेश को वाणी देकर वहाँ की विविध प्रवृतियों को परिवेशानुकूल उभारने का सफल प्रयत्न किया है।
10. राजनीतिक, सामाजिक अव्यवस्था पर आलोच्य नाटकों में कठोर व्यंग्य उभर उठा है।
11. इन आलोच्य नाटकों में मानवी जीवन की दुःखद स्थितियों के दर्शन होते हैं।